कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

प्रतिकूल परिस्थिति में भी अविरल कर्म प्रवाह है,
वनवासी के कठिन परिश्रम से बढ़ता उत्साह है।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 31, अंक 2
अप्रैल-जून 2020 (विक्रम संवत् 2077)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता, डॉ. रंजना त्रिपाठी

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- कोरोना काल में हमारी … 2
- वनयोगी बालासाहब देशपांडे … 3
- प्रश्न मंच 6
- कल्याण आश्रम की चिकित्सा सेवाएं 7
- 8
- है अंधेरी रात पर दीवा जलाना… 10
- बालासाहब देशपाण्डे : संस्मरण… 11
- कौन है भारतवर्ष की सीमाओं… 13
- अमृत वचन 14
- शोक संवाद 14
- बिहार रेजिमेंट के शहीदों की… 15
- बोधकथा … 16
- कविता… 16

कोरोना काल में हमारी कार्यपद्धति

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, अलीपुर महिला समिति

दुनिया भर में कोरोना वायरस से अब तक 4 लाख से ज्यादा लोगों की जान जा चुकी है। अब तो यह वैश्विक महामारी घोषित हो चुकी है। साथ ही संक्रमण के मामले भी बढ़कर 80 लाख से अधिक हो गए हैं और इससे मुक्ति भी जल्दी नहीं मिलती नजर आ रही है। हमारे शोधकर्ता और तमाम वैज्ञानिक औषधियों और टीकों पर दिन-रात काम कर रहे हैं ताकि मानव जाति को अपने चपेट में लेने वाली इस वैश्विक महामारी से निजात पाया जा सके।

यह अदृश्य वायरस हमारे हाथ के सहारे नाक और मुँह के रास्ते फेफड़ों को संक्रमित करता है। समय पर इसका इलाज न हुआ तो रोगी की जान भी चली जाती है। लेकिन कर्मवीर कभी भी हार नहीं मानते। हम संक्रमित न हों इसके लिए तरह-तरह की समय-समय पर मार्गदर्शिकाएँ जारी हुई हैं जिसमें सामाजिक दूरी बनाए रखना एक महत्वपूर्ण नियम है। लोग कम से कम एकत्रित हों और संगठन कार्य भी अबाध गति से चलते रहें, इसके लिए अनेक सुझाव समय-समय पर मिलते जा रहे हैं। इस महामारी से लड़ते हुए नवीन कार्यशैली का विस्तार होना भी आवश्यक हो जाता है।

देखकर बाधा विविध बहु विघ्न घबराते नहीं।
काम कितना ही कठिन हों किन्तु उकताते नहीं।।

मानव समाज के सूरज नहीं डूबने देना है

अपनी कार्यशैली के कुछ बिन्दुओं पर प्रकाश डालना आवश्यक हो जाता है। जब कार्यकर्ता बंधु घरों में कैद हो गए हैं या सामाजिक दूरी का पालन करते हुए आपस में मिलना-जुलना नहीं हो पा रहा है ऐसे में बातचीत से एक दूसरे का मनोबल बढ़ाते रहना है। सद्विचारों को साझा करते रहना है। कभी-कभी एकाकीपन बहुत बड़े मानसिक तनाव का कारण भी बन जाता है। इस संकट काल में कार्यकर्ताओं को जोड़े रखने एवं उनमें प्राण फूंकने का सबसे बड़ा तकनीकी साधन वेबिनार है। इस प्लेटफार्म के जरिए हमें एक दूसरे से जुड़े रहना है। इसके माध्यम से हम नियमित बैठकें करते हुए संगठन कार्य को आगे बढ़ा सकते हैं। **बैठकें और कार्यकर्ता हमारे संगठन के प्राण हैं।** इस महामंत्र को सामने रखते हुए एक दूसरे को फोन करना, कुशलक्षेम पूछना, आत्मीयता बनाए रखना, छोटी-छोटी आशावादी पंक्तियां भेजते रहना हम सबका दायित्व बनता है। वनांचलों में चलनेवाली गतिविधियों की जानकारी भी हम एक दूसरे को वर्चुअल बैठकों के माध्यम से आसानी से दे सकते हैं।

नया सबेरा आयेगा,
है अंधेरा घना तो
प्रकाश भी आयेगा,
दिख रहा है पतझड़
बसंत में नया पल्लव फिर आयेगा।
राह में धूल मिट्टी,
सूखा है आँगन
बहते झरनों में
बीच राह के पत्थरों में
सावन फिर पुष्प खिलायेगा।
मधुर ध्वनि सुनायेगा।

वनयोगी बालासाहब देशपांडे : वनवासियों के लिए समर्पित जीवन

स्वर्गीय रमाकांत केशव देशपाण्डेजी ने न केवल वनवासी कल्याण आश्रम का सूत्रपात किया बल्कि सम्पूर्ण जीवन वनयोगी बनकर आखिर श्वांस तक इस संगठन के जरिये वनवासी समाज को मार्गदर्शन देते रहे। बालासाहब का जन्म और कल्याण आश्रम की स्थापना दिवस संयोगवश एक ही दिन 26 दिसम्बर को हुआ था।

बालासाहब का जन्म नागपुर के पासा रामटेक में 1913 में हुआ था। 1967 में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात उन्होंने नागपुर में वकालत प्रारंभ की। वे जन्मजात देशभक्त थे। उनका संबंध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के डॉ. हेडगेवारजी एवं गुरुजी गोलवलकर के साथ विद्यार्थी जीवन में ही स्थापित हो गया था। आजीवन समाज सेवक बने रहने की प्रेरणा उन्हें इन दोनों महानुभावों से ही प्राप्त हुई। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में रामटेक के लोगों को बालासाहब का युवा नेतृत्व प्राप्त हुआ था। उनके जुझारुपन के कारण ही भारत स्वतंत्र होने के उपरांत तत्कालीन मध्यप्रांत एवं बरार के मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल ने सुदूर जशपुर क्षेत्र में (वर्तमान छत्तीसगढ़ प्रांत में) ईसाई मिशन की गतिविधियों से उभरे अलगाववाद से वहां के लोगों को राष्ट्रहित में मोड़ने हेतु बालासाहब को सरकारी योजना के अन्तर्गत वहाँ भेजने का निर्णय लिया गया था।

पंडित जवाहरलाल नेहरू, गुजरात के गाँधीवादी समाज सुधारक ठक्कर बापा और पं. रविशंकर शुक्ल के बीच हुई बातचीत के फलस्वरुप जशपुर में 'Backward Area Development Scheme' के अन्तर्गत जिला अधिकारी के रूप में उनकी नियुक्ति 1948 में हुआ। बालासाहब ने लगभग डेढ़ साल के अपने कठिन परिश्रम से 108 विद्यालयों को इन बीहड़ क्षेत्र में शुरू करने का कीर्तिमान बनाया।

पूज्य ठक्कर बापाजी के जशपुर आगमन के अवसर पर इस क्षेत्र का बढ़ता हुआ चित्र पेश करने में वे कामयाब रहे। देशभक्ति से प्रेरित होकर भारतमाता की जयकार करते हुए उनका स्वागत उस क्षेत्र के ग्रामवासियों ने किया। 'Backward Area Development Scheme' देशभर में लागू होने पर भी जशपुर में इस Scheme के क्रियान्वयन में जो विशेष उत्साह दिखाई पड़ा था उसके लिए ठक्कर बापा ने बालासाहब की प्रशंसा की।

चुनावी राजनीति से प्रभावित होकर ईसाई मिशनरियों के दबाव में बालासाहब के स्थानान्तरण की पेशकश चली तो वनवासी कल्याण हेतु जशपुर क्षेत्र में ही रहकर कार्य करने की उनकी प्रबल इच्छा के कारण वे नौकरी से इस्तिफा देकर 'वनवासी कल्याण आश्रम' नामक एक स्वयंसेवी संस्था की स्थापना 1952 में 26 दिसम्बर के दिन एक छात्रावास के रूप में की। इसके पश्चात् जनजाति समाज में स्वाभिमान जगाने हेतु अनेक उपक्रम बालासाहब ने हाथ में लिये। गाँव-गाँव में धर्म जागरण यात्रायें

आयोजित कर अपनी परम्परागत धर्म संस्कृति पर अडिग श्रद्धा निर्माण करने का प्रयास लगातार करते रहे। वनवासी समाज में स्वास्थ्य सेवा हेतु जशपुर क्षेत्र में एंबुलेन्स एवं पूर्ण समय देने वाले चिकित्सक की व्यवस्था की। शिक्षा प्रकल्प के जरिये गाँव-गाँव में बच्चों एवं युवाओं में आत्मविश्वास जगाने का काम लगातार करते रहे। वनवासियों के जीवन से वे समरस हो गये थे। उनके मन की भावनाओं का वे हमेशा प्रतिनिधित्व करते थे।

मध्यप्रदेश सरकार की ओर से भवानी शंकर नियोगी के नेतृत्व में ईसाई मिशन द्वारा हो रहे मतांतरण के संदर्भ में जांच समिति का गठन किया गया था। उक्त जांच समिति के सामने ईसाई मिशनरियाँ किस-किस प्रकार धर्मान्तरण की साजिश रचकर सरल वनवासी भाईयों को मतांतरित करते हैं, इन तथ्यों को इकट्ठा करने हेतु बालासाहब और उनके सहयोगियों ने विशेष योगदान दिया। फलस्वरूप लगभग 11000 ऐसे तथ्यों को जांच आयोग के सामने लाने में वे कामयाब हुए। उल्लेख योग्य है कि मिशनरियों के राष्ट्रविरोधी कार्यों का खुलासा करने वाली बहुचर्चित नियोगी कमीशन रिपोर्ट प्रकाशित होते ही इसाई मिशनरियों ने सभी कॉपियों को खरीदकर जला दिया।

1975 तक कल्याण आश्रम का कार्य ओड़िशा के सुन्दरगढ़ क्षेत्र, तत्कालीन बिहार के गुमला आदि क्षेत्रों तक फैल चुका था। बालासाहबजी, मोरुभाऊ केतकर, प्रसन्न दामोदर सप्रे, भीमसेन चोपड़ा आदि कार्यकर्ताओं के विशेष प्रयास इस सफलता के पीछे रहा। 1977 के बाद इस संगठन को अखिल भारतीय स्तर पर बढ़ाने का निर्णय लिया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक बालासाहब देवरस ने सभी प्रांतों में इस कार्य हेतु योग्य और निष्ठावान कार्यकर्ताओं को कल्याण आश्रम के लिए उपलब्ध करवाया। फलस्वरूप कल्याण आश्रम ने एक अखिल भारतीय संस्था का रूप धारण किया। 1981 के दिल्ली कार्यकर्ता सम्मेलन में लगभग सभी प्रांत से कार्यकर्ता पधारे। बालासाहब का जीवन कल्याण आश्रम का ही पर्याय था। कल्याण आश्रम के उद्देश्य को संपूर्ण देश में फैलाने हेतु उन्होंने देश भर की यात्रा की।

भारतीय संस्कृति के मूल्य आज भी जनजाति समाज में ही विद्यमान है। लगभग 8 करोड़ आबादी वाले वनवासी समाज के सर्वांगीण विकास के बिना देश का विकास- शक्तिशाली बनना संभव नहीं होगा' यह बालासाहब की मूलभूत सोच रही। नागालैण्ड, मेघालय, असम, मणिपुर, त्रिपुरा आदि उत्तर पूर्वांचल के राज्यों में भी प्रवास करके वहाँ के लोगों को अपनाने में उन्होंने योग्य पहल की। मेघालय में उनसे पूछे गये प्रश्न, **''क्या आप भी ईसाई मिशनरियों जैसे हमें हिंदू बनाने आए हैं?** का उत्तर उन्होंने **''आप जैसे भी है हमारे हैं, आपके परंपरागत धर्म संस्कृति की रक्षा करने हेतु हम आपका साथ देंगे तो क्या कोई हर्ज है?''** इस प्रकार देकर न केवल उनका दिल जीता बल्कि अपने सोच के सर्व समावेशकत्व का परिचय भी दिया। उनकी इस विशाल दृष्टि के कारण ही आज कल्याण आश्रम का कार्य उत्तर पूर्वांचल के सभी प्रांतों में फैल गया है। यात्रा के दौरान वे वहाँ के प्रमुख रानी मां गाईदिन्ल्यू, एन.सी. जेलियांग, हिप्सन रॉय, एण्डर्सन मावरी, मिजिलुंग कामसेन, अजयदेव वर्मन आदि जनजाति नेताओं से मुलाकात की। देशपाण्डे जी प्रकृति से उग्र स्वभाव के थे। वे मूल्यों के साथ कभी समझौता करने की मानसिकता वाले नहीं थे। जशपुर क्षेत्र में प्रारंभिक समय में मिशनरियों

ने जो चुनौती खड़ी की, उसका उन्होंने डटकर सामना किया था। ऐसा लगाता था मानो जशपुर में मिशनरियों द्वारा समानांतर सरकार चल रही हो, फिर भी वे निडर होकर अपने कार्य को आगे बढ़ाते गये। **पर उनका अंतरमन आध्यात्मिकता और प्रेम से भरपूर था।** वे रामकृष्ण मिशन से दीक्षित थे। गीता प्रेस के पूज्य हनुमान प्रसाद पोद्दार जी के साथ उनका संबंध काफी निकटतापूर्ण रहा। वे समय मिलने पर उनके साथ सहवास करने हेतु गोरखपुर के गीता वाटिका में जाकर वहाँ के आध्यात्मिक वातावरण की अनुभूति लेते थे। उनके लिए वनवासी भाइयों के बीच का जीवन प्रेमपूर्ण एवं सहज था। आध्यात्मिकता से प्रेरित होकर उन्होंने इस कार्य को जीवन भर किया। रामकृष्ण मिशन से उनका संबंध बना ताउम्र बना रहा। उनके संपूर्ण परिवार ने इस कार्य के लिए उनका साथ दिया। उनकी धर्मपत्नी ने आजीवन त्यागमय जीवन व्यतीत करते हुए उनके इस कार्य में तन-मन पूर्वक योगदान दिया।

उनकी उपस्थिति में भारत के प्रधानमंत्री रहे मोरारजी देसाई, वी.पी.सिंह, अटल बिहारी वाजपेयी का आगमन कल्याण आश्रम के जशपुर केन्द्र पर हुआ। यह बालासाहब के कार्य की महत्ता को दर्शाता है। बालासाहब ने कल्याण आश्रम की ओर से 2 जुलाई 1992 को भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंहा राव को एक ज्ञापन दिया। इस ज्ञापन के माध्यम से राष्ट्रीय अखंडता एवं सामाजिक समरसता के लिए विघातक **मूल निवासी संकल्पना** के संदर्भ में अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की क्या भूमिका होनी चाहिए यह स्पष्ट किया। अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया में कोई मूल निवासी हो सकता है, पर भारत में कोई भी व्यक्ति या समूह मूल निवासी नहीं है। यहाँ तो हम सब भारतवासी मूल निवासी हैं, क्योंकि भारत में आक्रमणकारी अथवा बाहर से आये और मूल भारत ऐसे दो जनसमूह नहीं है। मूल निवासी संकल्पना भारत के लिए समाज विघातक है। संयुक्त राष्ट्र संघ में अपने प्रतिनिधियों ने भी इन्हीं विचारों का प्रतिपादन कर अपनी भूमिका प्रस्तुत की जो अब तक बरकरार है।

वनवासी गाँव में पैर जमाते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर की सोच रखने वाले महान कर्मयोगी का महाप्रयाण 21 अप्रैल 1994 में अपनी कर्मभूमि जशपुर में ही हुआ। वनवासी समाज भारत का अभिन्न अंग ही नहीं मुख्यधारा है इस परिकल्पना के साथ पूज्य देशपाण्डे जी ने जो आदर्श प्रस्तुत किये उन आदर्शों पर जीने हेतु सैकड़ों युवक-युवतियाँ सामने आकर इस यज्ञ में आहुति डाले, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ■

प्रश्न मंच

01 शंभुधन फूंगलोसा भारत के किस प्रान्त का क्रान्तिकारी है?

02 शंभुधन किस जनजाति का क्रांतिकारी था?

03 शंभुधन की पत्नी का नाम बताएं? उसकी क्या इच्छा थी?

04 शंभुधन ने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र किस गुफा को बनाया?

05 अल्लुरी सीताराम राजू किस प्रदेश का क्रांतिकारी था?

06 अल्लुरी सीताराम राजू को बचपन की किस घटना का उस पर प्रभाव पड़ा?

07 अंग्रेज ने अल्लुरी सीताराम राजू को किस नाम से पुकारते थे?

08 अंग्रेजो ने उसे पकड़वाने के लिए अखबारों में कितने रुपये नकद घोषित करवाया?

09 रानीगाइदिन्ल्यू का जन्म कब और किस जनजाति में हुआ?

10 रानीगाइदिन्ल्यू को स्वतंत्रता की प्रेरणा किससे मिली?

11 रानीगाइदिन्ल्यू ने कितने वर्ष जेल में बिताए?

12 रानीगाइदिन्ल्यू को रानी मां उपाधि किसने दी?

13 रानीगाइदिन्ल्यू किस संस्कृति को सुरक्षित रखना चाहती थी?

14 झलकारी बाई का जन्म कहाँ हुआ ?

15 झलकारी बाई के पति का नाम क्या था?

16 झलकारी बाई के बचपन की एक घटना का उल्लेख करें ?

17 सागर सिंह का हृदय परिवर्तन किस प्रकार हुआ ?

18 झलकारी बाई की रानी लक्ष्मी बाई के अंतरंगता किसे खलने लगी?

19 तांत्या भील भारत के किस प्रदेश का वनवासी था ?

20 तांत्या भील जनमानस में मामा के रूप में कैसे विख्यात हुआ ?

21 तांत्या भील को पकड़वाने मे किसकी साजिश थी?

22 जोरिया भगत का जन्म कहाँ और किस जनजाति में हुआ?

23 जोरिया भगत के मुख्य सहयोगी कौन थे?

24 दुर्गावती किस प्रदेश की महारानी थी?

25 दुर्गावती का विवाह किसके साथ हुआ तथा मृत्यु के बाद उन्होंने क्या किया?

26 अकबर के किस सेनापति ने गढ़मंडला पर कितनी बार आक्रमण किया?

27 उरांव जनजाति का शासन कहाँ से संचालित होता था?

28 रोहतास गढ़ पर मुगलों के आक्रमण का नेतृत्व किन महिलाओं ने किया?

29 इस युद्ध में किस महिला ने विश्वासघात किया?

30 जनी शिकार प्रथा क्या है, क्यों और कितने अन्तराल पर मनाई जाती है?

(उत्तर कल्याण भारती इसी अंक के भाग 5 में)

कल्याण आश्रम की चिकित्सा सेवाएं

अखिल भारतीय चिकित्सा प्रमुख डॉ. पंकज भाटिया के फेसबुक पृष्ठ पर आधारित

कोरोना संकटकाल में भी कल्याण आश्रम अनवरत कर्मपथ पर बढ़ता रहा है। किसी व्यक्ति, संस्था और संगठन की पहचान विपरीत परिस्थितियों में निरंतर आगे बढ़ते रहने पर ही हो पाती है। कल्याण आश्रम भी इसी तरह का संगठन है और उससे जुड़े कार्यकर्ता बन्धु भी इसी भावना के साथ काम करते रहे हैं। जब सामाजिक दूरी ही कोरोना रोग का निदान बनकर सामने आ खड़ी हुई तो कभी वेबिनार, कभी फेसबुक, कभी यू ट्यूब और कभी वीडियों कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कल्याण आश्रम के अधिकारी और कार्यकर्ता अपने कार्य को आगे बढ़ाते रहे हैं। यहाँ पर यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी...

जब नाव जल में छोड़ दी
तूफान में ही मोड़ दी
दे दी चुनौती सिंधु को
फिर धार क्या मझधार क्या...

इन्हीं पंक्तियों को चरितार्थ करते हुए कोरोना संकटकाल में कल्याण आश्रम की बहुत सारी गतिविधियाँ निरन्तर आयोजित हो रही है, उसमें एक कार्यक्रम स्वास्थ्य सुरक्षा को लेकर डॉ. पंकज भाटिया (चिकित्सा आयाम प्रमुख) का भी हुआ है, जिसमें उन्होंने स्वास्थ्य सुरक्षा को लेकर अपना सारगर्भित वक्तव्य प्रस्तुत किया, जो 13 जून 2020 को कल्याण आश्रम के फेसबुक पृष्ठ के माध्यम से जन-जन तक पहुँचने में सफल हुआ। इस वक्तव्य से जुड़ी बातें कल्याण भारती के माध्यम से आप सभी कार्यकर्ताओं तक पहुँचाने का यह एक लघु प्रयास है।

कल्याण आश्रम के फेसबुक पृष्ठ के लिंक पर जाकर हमने जो आनंदानुभूति की आप सबसे साझा करने की कोशिश है यह। जैसे ही लिंक को क्लिक किया एक तेजस्वी वाणी का उद्घोष मन के तारों को झंकृत कर गया। यह आवाज थी कार्यक्रम के सफल संचालक श्री प्रमोद पेठकर की जिन्होंने पंकज जी की वार्ता से पहले आगरा स्थित बालिका छात्रावास की वनवासी बालिकाओं द्वारा गाया गया सुमधुर गीत प्रस्तुत करने का पवित्र आह्वान किया। गीत के बोल थे...**स्वस्थ बने जीवन सबका**।

डॉ. पंकज जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि पूरा जनजाति समाज बीहड़ गाँवों में रहता है जहाँ बरसात के दिनों में मलेरिया का प्रकोप फैल जाता है। ऐसे क्षेत्रों में पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होती है, जहाँ चिकित्सा सुविधाओं को मुहैया कराया जाए। अपने वक्तव्य के दौरान पंकज जी ने अनेक संस्मरण सुनाए जो जनजातीय गाँवों में प्रवास के दौरान उन्होंने अनुभव किए थे। ऐसा इसलिए जोड़ा ताकि हम सभी वनवासी भाई-बहनों के जीवन में आने वाली कठिनाइयों को समझ सके। उन्होंने बताया कि आज भी ऐसे अनेक गाँव है जहाँ पर कई-कई महीनों तक चिकित्सा सुविधाएं पहुँच ही नहीं पाती। अपनी ई वार्ता के दौरान पंकज जी ने राजस्थान, केरल, मध्यप्रदेश, असम, त्रिपुरा आदि के अनेक गाँवों का जिक्र भी किया जहाँ कल्याण आश्रम 4500 स्वास्थ्य प्रकल्पों के माध्यम से वनवासी भाई-बहनों के शारीरिक कष्टों को दूर करता रहा है। अपने संस्मरण सुनाते हुए अनेक रोमांचक घटनाओं का भी वर्णन किया। एक बार तो नदी के बीच में ही मोटरबोट खराब हो गई थी, फिर भी कर्मवीरों का मन भय से काँपा नहीं। दांत और नेत्र संबंधी रोग जनजाति क्षेत्रों में बहुत पाए जाते हैं। इन रोगों के निदान के लिए कल्याण आश्रम अपने शिविर लगाकर वनवासियों के कष्ट दूर करने का प्रयास करता है। कल्याण आश्रम द्वारा भेजी जाने वाली औषधियाँ इन क्षेत्रों में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाती है।

अपनी वार्ता को पूरा करते हुए डॉ. पंकज जी ने पूरे समाज से आग्रह किया कि जब भी अवसर मिले हम अवश्य अपने वनवासी भाई-बहनों के बीच पहुँचे एवं उनके आरोग्य के लिए अपनी ओर से जो कुछ बन पड़े करें।

(श्रुति प्रति लेखन - रंजना त्रिपाठा)

अनुसूचित जनजाति और जनगणना में पहचान का अंकन

डॉ. मन्नालाल रावत

स्वतंत्र भारत की जनगणना सन् 1951 में तत्कालीन चुनी हुई वैधानिक सरकार द्वारा की गई थी। अब हम सन् 2021 की जनगणना के द्वार पर हैं। आइए इस बारे में हम जानकारी शेयर करें कि हमारी पहचान संबंधी क्या टिप्पणी/क्या सूचना इस जनगणना में अंकित करानी है जो हमारे संविधान के अधिकारों/आरक्षण के बनाए रखेगी। सावधान! यदि हमने गलत सूचना/टिप्पणी अंकित कर दी तो हमारी 'अनुसूचित जनजाति' की पहचान समाप्त हो सकती है। जानिए कैसे?

1. ये कितना सही है कि अनुसूचित जनजातियों की पहचान खोने के बाद संविधान के अनुच्छेद 342 के अनुरूप संवैधानिक हक नहीं मिलेंगे? अपना–अपना ज्ञान बढ़ाए और तथ्यात्मक जानकारी के आधार पर सभी को अवगत कराएं।

2. क्या यह सही नहीं है कि हमारे पूर्वजों की पहचान ही हमारी पहचान है, तब हमें उन्हीं के अनुरूप अपनी पहचान बनाई रखनी पड़ेगी, यही वैधानिक बाध्यता है यानि कि उनके धर्म, संस्कृति, आन–बान, इतिहास सब कुछ अपना है, यही विरासत है। यदि उन्होंने हिंदू लिखा है तो हम हिंदू हैं और उन्हें शिव धर्म लिखा है तो हम शिव है, उन्होंने सिक्ख लिखाया तो हम सिक्ख हैं।

3. आगामी जनगणना में यदि हमने हमारे पूर्वजों के अनुरूप धर्म वाले कॉलम में कोई भी हेरा फेरी की या बदलाव किया तो हमें संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत अनुसूचित जनजाति के विशेष अधिकार प्राप्त नहीं होंगे और हमें सभी सुविधाओं से वंचित होना पड़ेगा। क्योंकि यहां पहचान आधार है और बदलने पर सदस्य पहचान खो चुके होंगे।

4. हमारी पारिवारिक पहचान ही हमारा संविधान एक आधार है जो हमें अनुसूचित जनजाति बनाता है वरना हम मात्र जनजाति बनकर रह जाएंगे जिसकी कोई संवैधानिक मान्यता नहीं है ना कोई आरक्षण की सुविधा रहेगी और राजनीतिक पद यानि सरपंच, MLA, MP पार्षद आदि के चुनाव लड़ने, कोई भी सरकारी नौकरी पाने या मनरेगा आदि अन्य सुविधाएं लेने का वैधानिक मान्यता नहीं रहेगी। इस प्रकार के परिवर्तन से परिवार के सभी सदस्य अयोग्य हो जाएंगे।

5. अतः हमें यानी अनुसूचित जनजाति परिवारों को इस बात का ध्यान रखना होगा कि सन् 1951 से हमारी जो पहचान रही है। वही हमारी पहचान इस जनगणना–2021 में भी बनी रहे।

6. यह महत्वपूर्ण है कि India that is Bharat में सन् 1951 की जनगणना के अनुसार 99.13 प्रतिशत जनजातियों ने अपना धर्म 'हिंदू' दर्ज कराया था जो कि जनगणना के कॉलम नंबर 1 में आता है। यह दाखिला देश की प्रथम चुनी हुई सरकार द्वारा किया गया था। जो ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और जीवन शैली की मूलाधारों पर स्वतः प्रकट होता है कि जनजातियां आदि–हिंदू हैं, हिन्दू हैं और उसी अनुरूप हमें संवैधानिक मान्यताएं मिले हैं। हमारे पूर्वजों ने उसी अनुरूप अपने रिकॉर्ड तैयार किए हैं और यही रिकॉर्ड मात्र हमें आगे भी अनुसूचित जनजाति बनाए रखेंगे और संवैधानिक लाभ लेने के लिए वैधानिक आधार प्रदान करेंगे।

7. यह जरूर है कि इंडिया दैट इज भारत की 700 से अधिक अनुसूचित जनजातियों की पूजा पद्धति भिन्न–भिन्न है। परंतु यह मात्र बाहरी आवरण है। यह स्थानीय परिवेश के कारण हैं और पूजा पद्धति मात्र एक तरीका है जो हम भगवान के प्रति अपने इष्ट के प्रति व्यक्त करते हैं परंतु सबका भाव एक ही है...और वह

भाव है इस देश का मूल भाव 'सनातन भाव' जो हमारे पूर्वजों ने सन् 1951 की जनगणना में दर्ज कराया था। दैनिक रूप से इसे हिंदू धर्म या जीवन शैली कहा जाता है।

8. हमारे पूर्वजों की जीवन शैली या धर्म का अनुसरण करने के लिए हमें स्थानीय जिला कलेक्टर के कार्यालय में जाकर शपथ पत्र देना होता है और एक निर्धारित प्रक्रिया अपनानी पड़ती है। यदि वह प्रक्रिया नहीं है तो हम हमारी सनातन परंपरा, हमारे पूर्वजों की परंपरा से पृथक माने जाएंगे जो कि हमारी अनुसूचित जनजाति के रूप में पहचान खो देगा।

9. पिछले कुछ दिनों से सोशल मीडिया में इस बात का दुष्प्रचार चल रहा है कि हम जनगणना में क्या अंकन करें और क्या अंकन नहीं करें। कोई लिख रहा है कि हमें हमारा कोई धर्म नहीं है यह लिखना है। वह सारा भ्रम विदेशी षड्यंत्र का एक भाग है जो जनजातियों को जंगल में ही रहने देना चाहता है और अकेला रखकर शिकार करना चाहता है जो संभवतः यह नक्सलवाद या किसी और तरीके का हो सकता है।

10. हमें इससे सावधान रहना है। अगली जनगणना ने हमें धार्मिक संबंधी जीवनशैली संबंधी हमारी टिप्पणी कॉलम नंबर 1 में अंकित करनी है जो हमें हमारे पूर्वजों की पहचान बनाएगा और हमें संवैधानिक अधिकारों से वंचित नहीं करेगा। **जय हिंद**

प्रश्न मंच के उत्तर ...

1. असम प्रान्त
2. डिमासा
3. नासादी, वह आन्दोलन में पति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहती थी
4. भुवन गुफा
5. आंध्र प्रदेश
6. बचपन में पिता के साथ जाते समय राजू ने गोरे सिपाही को देखकर जब अभिवादन करना चाहा तो पिता ने उसे डांटा कि ये हमारे मित्र नहीं शत्रु है। बचपन की यह घृणा आगे चलकर विद्रोह में बदल गई।
7. *रम्पाफितूरी* (परेशान करने वाला)
8. 10,000 रुपये
9. 26 जनवरी 1915 में मणिपुर के रांगमई गांव में
10. चचेरे भाई जादोनांग से
11. 14 वर्ष
12. जवाहरलाल नेहरू ने
13. नागा संस्कृति को
14. झांसी के निकट भोजला गाँव में
15. पूरन सिंह
16. 10 डाकूओं के साथ वीरतापूर्वक मुठभेड़ करना
17. झलकारी बाई के उद्‌बोधन से
18. पीरअली और दुल्हाजू
19. मध्यप्रदेश के निमाड़ क्षेत्र
20. क्यों कि उन्होंने अपने सैनिकों को हिदायत दी थी कि किसी भी स्त्री या बच्चे पर जुल्म न करें
21. धर्म बहनोई ***गणपति***
22. गुजरात के साबरकांठा जिले में पंचमहल के बीहड़ जंगल में, नायक दास नामक वन्य जनजाति में
23. रूपानायक दास और उसका पुत्र गगलिया
24. गढ़मंडला
25. दलपत शाह के साथ। उनकी मृत्यु के बाद रानी ने वीर नारायण को गद्दी पर बैठाकर राज्य की बागडौर अपने हाथ में लेकर शासन किया।
26. आशफ खाँ ने 3 बार
27. रोहतासगढ़
28. सिनगी दई और कैली दई
29. लुन्दरी नामक ग्वालिन ने
30. जनी शिकार प्रथा मुगलों के साथ युद्ध में उरांव महिलाओं की विजय की स्मृति में प्रत्येक 12 वर्ष के अन्तराल पर मनाई जाती है। महिलाएं पुरुष वेश धारण कर अस्त्र-शस्त्र लेकर ढोल नगाड़े के साथ शिकार पर निकलती हैं तथा जनी शिकार का उत्सव मनाती है।

है अंधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है...

- अमिता बंका, अलीपुर महिला समिति

जब पूरी दुनिया वैश्विक महामारी कोविड-19 से त्राहि माम पुकार रही है...और बंगाल पर दोहरी चोट अम्फान का कहर...तब इस परिदृश्य को नकारते हुए कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं ने गंगासागर और सुंदरवन में NMO और सेवा भारती के

संयुक्त तत्वावधान में चार-चार स्थानों पर मेडिकल कैम्प का आयोजन किया। टूटे-फूटे रास्ते, बिजली गुल, संचार-साधन गायब; ऐसी भयंकर परिस्थिति को नकारते हुए कल्याण आश्रम के अप्रतिहत योद्धा श्री विवेक जी, प्रान्तीय चिकित्सा प्रमुख, के नेतृत्व में 30 चिकित्सक जिसमें 10 मुर्शिदाबाद मेडिकल कॉलेज के थे, ने सफलतापूर्वक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया।

जरूरतमंदों को आवश्यक औषधियाँ, राशन-सामग्री और मास्क वितरित किए गए। इस शिविर की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि अम्फान के आने के बाद जब संपर्क मार्ग लगभग न के बराबर थे, तब कल्याण आश्रम के कर्मवीर बीहड़ रास्तों को पार करते हुए गंगासागर के तीन गाँवों में और सुंदरवन के गौसाबा से जुड़े कई क्षेत्रों में नेत्र-जाँच,

उच्च रक्तचाप जाँच और मधुमेह जाँच कर रोगियों को भरोसा दिया कि संकट की इस घड़ी में वे अकेले नहीं हैं। इस चिकित्सा शिविर में गौसाबा स्थित प्रीतिलता छात्रावास की कार्यकर्ता बहनों एवं छात्राओं द्वारा बनाए गए मास्क बाँटे गए। वितरित की जाने वाली राशन सामग्रियों की पैकेजिंग भी इन्हीं बहनों और छात्राओं द्वारा की गई।

जब छोड़ दी सुख की कामना
आरंभ कर दी साधना
संघर्ष पथ पर बढ़ चले
फिर फूल क्या अंगार क्या।

बालासाहब देशपाण्डे : संस्मरण-अनुभूति-प्रेरणा

स्व. बालासाहब देशपाण्डेजी के सान्निध्य में रहे कुछ कार्यकर्ताओं के विशेष अनुभव यहाँ प्रस्तुत है जो वर्तमान में भी हमारे लिए पथ-प्रदर्शक दीप के समान है:-

वज्र से कठोर, फूल से भी कोमल थे; ''पूज्य देशपाण्डे जी''

- मा. अवध बिहारी श्रीवास्तव

जशपुर की एक घटना है। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह कल्याण आश्रम में पधारने को थे। सभी तैयारियाँ परिपूर्ण थी। सरकारी अमले बार-बार आकर मुआयना कर गये थे। उनके सुझाव के अनुसार तैयारी हो गई थी। जो अपने कार्यकर्ता एवं शुभचिंतक बाहर से परिसर में आने वाले थे, उन्हे प्रवेशिका दे दी गई थी। सरकारी लोग चेकिंग में लगे थे-डिटेक्टर लगा था। कल्याण आश्रम परिसर में कुछ परिवारों के लोग रहते थे। वे सभी लोग अक्षत, रोली, फूलमाला आदि के साथ स्वागत को तैयार थे। मात्र 20-25 मिनट शेष थे प्रधानमंत्री के आने में। बाजा-गाजा चल रहा था। उसी समय एस.पी. को क्या सूझा कि उसने आदेश दे दिया कि कल्याण आश्रम के अन्दर रहने वाले 5-6 परिवार के लोग भी बाहर से जांच कराकर व डिटेक्टर से होकर अन्दर आए। दो-तीन पुलिस वाले परिवार के लोगों को घर से बाहर आने को कह रहे थे। मैंने देखा तो मना किया पर वे न माने। मैंने बालासाहब को बताया तो वे आग बबूला हो गये। एस.पी.को बुलवाया और बोले-**'मेरे यहां प्रधानमंत्री का कार्यक्रम नहीं चाहिए।'** बाजा-गाजा बन्द। तुरन्त खबर पाकर आई.जी. आए। माफी मांगी। एस.पी. ने भी क्षमा मांगी। ऐसी थी बालासाहब की दृढ़ता और सद्य:निर्णय करने की क्षमता।

पूज्य बालासाहेब देशपाण्डे- एक संस्मरण

-कृपा प्रसाद सिंह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

संगठक (संगठन मंत्री) के बारे में बालासाहब का कहना था कि संगठक को सुनने की अच्छी आदत होनी चाहिए। कार्यकर्ताओं की कमियों को जानते हुए उसे अच्छाई तक लाने का प्रयास करना चाहिए। निर्णय स्वयं बताने के बजाय टोली से निर्णय करवा लेना व उसके कार्यान्वयन का मार्ग टोली से निकलवा लेना चाहिए। किसी कार्य का श्रेय स्वयं न लेकर टोली को देना। कार्य संचालन में सबका सहभाग है, ऐसी अनुभूति सभी कार्यकर्ताओं में पैदा करना। कार्य का लक्ष्य उसके संपादन पर होने वाले खर्च, उसके लिए समय का निर्धारण-सारी बातें टोली में निश्चित करवा लेना आदि संगठक की सफलता के आधार बिंदु है।

बालासाहब जी की अविस्मरणीय यादें

-जेठा नाग, प्रांतीय अध्यक्ष झारखण्ड

उदयपुर के अखिल भारतीय सम्मेलन में मैंने पहली बार बालासाहब देशपाण्डे जी को देखा था जो सम्मेलन में चुप-चाप लोगों की बातें सुनते थे और बाद में अपना अध्यक्षीय भाषण देते थे। जशपुर में कल्याण आश्रम के अनेक कार्यक्रम होते रहते थे। उनमें एक कार्यक्रम था **सरहुल महोत्सव**। झारखण्ड से हमें आमंत्रित किया जाता था। सरहुल उत्सव के बाद समाज सेवक चमरा मुण्डा के साथ बालासाहब से मिलने उनके आवास पर गये। वे

खपरैल के मकान में बीमारी में अपने पलंग पर लेटे हुए थे। हमारे हाल-चाल पूछे। बीमारी में में भी उन्होंने अपना दुखड़ा नहीं सुनाया। समाज संगठन के बारे में बताया तो उन्हें बहुत अच्छा लगा। कहने लगे *''यह सब काम आप लोगों से (वनवासी समाज) ही हो सकता है। आपलोग इन कामों में लगे रहें।''* मैं सोचने लगा कि इतने बड़े संगठन के संस्थापक अपने खपरैल के मकान में लेटे हुए हैं। उनकी बातों का मेरे मन पर गहरा प्रभाव पड़ा, मुझे वैसा ही लगा जैसे महाभारत में शर शैय्या पर लेटे भीष्म पितामह धर्म के बारे में धर्मराज युधिष्ठिर को समझा रहे हों। श्रीराम चौदह वर्ष तक वनवासियों के बीच रहे और वनवासियों की भाषा भी सीखी। वनवासियों के बीच रहकर वे 'वनवासी राम' बन गए। बालासाहब देशपाण्डे जी 33 वर्ष तक वनवासियों के बीच रहे और **वनयोगी** बन गए। भगवान राम ने शबरी माता के जूठे बेर खाए तो बालासाहब ने वनवासियों के पत्तल-दोना में झांगुर मामा के हाथ का बनाया खाना खाया। ऐसी महान आत्मा को शत्-शत् नमन, जोहार।

श्रद्धेय बालासाहब देशपाण्डेजी का प्रथम सान्निध्य

- डॉ. शिव नारायण पाठक

सितम्बर 1978 में गारू, पलामू (आज के दिन लातेहार जिला) में वनवासी कल्याण केन्द्र की विधिवत् स्थापना के एक वर्ष के पश्चात् ही श्रद्धेय बालासाहब के आगमन का संयोग हुआ। तत्कालीन प्रदेश संगठन मंत्री मा. श्रीकृष्णचन्द्र भारद्वाज जी ने मुझे एक पत्र द्वारा पूज्य बालासाहब के गारू आगमन की सूचना दी थी। पूर्व योजना के अनुसार 12 सितम्बर को सामान्य पैसेन्जर बस द्वारा जशपुर से लोहरदगा-मेदिनीनगर होकर गारू पूर्वाह्न 9:30 पर आना हुआ।

पूज्य बालासाहब स्वभाव से सरल प्रकृति के तथा मधुरभाषी थे। सदैव उनके होठों पर मुस्कान रहती थी। उक्त पूरे प्रवास के क्रम में मेरा उनके सान्निध्य में खाना-पीना, सोना, उठना-बैठना साथ-साथ रहा। प्रवास के दौरान खाली समय मिलते ही मुझसे अनौपचारिक तौर पर बातें करते और इसी क्रम में कल्याण आश्रम, जशपुर की आद्योपांत चर्चा करते हुए बताते कि कैसी विषम परिस्थितियों में उस क्षेत्र में अनुकूलता का निर्माण हुआ। छोटी-छोटी घटनाओं का हवाला देकर चर्चा करते रहते। उस क्रम में उन्होंने विषम परिस्थितियों से निबटने और सफलता प्राप्त करने का मंत्र देते हुए कहा कि क्षेत्र में कार्य करते तथा कहीं भी आते-जाते समय अपने को अकेला मत समझो, कभी मनोमालिन्य की स्थिति न आने देना, ईश्वर की अनुकंपा बरसती रहेगी और सफल परिणाम तुम्हारे हाथ आयेगा। दूसरी बात यह है कि एक स्वयंसेवक के नाते संघ की शाखाओं का क्षेत्र में जाल बिछा दो; वही तुम्हारी अपनी शक्ति होगी और उसी से कर्मनिष्ठ, ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ताओं का समूह खड़ा होगा। उनके इन दोनों विचारों को मूलमंत्र अथवा बीजमंत्र मानकर इसी मंत्र का अनुशीलन कर में चलता रहा। इसी मंत्र का ही परिणाम था कि उस समय पूरे देशभर के केन्द्रों में से **गारू केन्द्र** को प्रशस्ति मिली। आज यद्यपि पूज्य बालासाहब सशरीर हमारे बीच में नही हैं किन्तु कभी भी मन को ऐसा नहीं लगता, कभी अनुभव में नहीं आता कि वे नहीं हैं। उनके दिये हुए विचार, पितृवत स्नेह और मार्गदर्शन सदैव मानस पटल पर झंकृत होते रहते हैं। मैं तो जब-जब उनसे मिला वही स्नेह, माधुर्य और वही आत्मीय भाव पाया। वे तो एक प्रकाश पुञ्ज हैं जो सदैव तिमिरान्धकार को नष्ट करते हुए मार्गप्रशस्त करते रहेगे।

कौन है भारतवर्ष की सीमाओं के अनदेखे प्रहरी?

- तारा माहेश्वरी

एक विचारणीय प्रश्न हम सभी के मध्य उपस्थित है–सही भारत कौन सा है? कौन है भारतवर्ष की सीमाओं के अनदेखे प्रहरी? कौन है जो देश की हजारों किलोमीटर की सीमा पर आज भी प्रतिकूल परिस्थितियों से जुझते हुए दृढ़ प्रतिज्ञ से खड़े हैं? इन्हीं सारे प्रश्नों के उत्तर वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री अतुल जोग ने अपने टेलीविजन इंटरव्यू (साक्षात्कार) में दिये।

वनवासी सेवा और संगठन कार्यो के लिए सर्वात्मना समर्पित अतुल जी ने बताया कि कल्याण आश्रम वनवासियों के मध्य आरोग्य, शिक्षा एवं स्वाभिमान जागरण का कार्य कर रहा है। ईसाई मिशनरियों के अति प्रभाव के बावजूद भी वनवासी अपने धर्म में ही रहे, धर्मान्तरित न हों, ऐसा मनोबल बढ़ाते हुए, आर्थिक रूप से उन्हें सबल करने का कार्य संगठन द्वारा हो रहा है। उन्होंने बताया कि वनवासी अपने धर्म का आज भी अत्यंत आदर करते हैं। वे धर्मान्तरित नहीं होना चाहते हैं। वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य करते हुए हमें नागालैण्ड में रानी गाइदिन्ल्यू, अरूणाचल में तालिम रुकबो, मेघालय में एण्डरसन मावरी, हिप्सन राय, मणिपुर में गंगमय मावरी इत्यादि अनेक लोग मिले जो अपनी धर्म-संस्कृति बचाने के लिए उत्सुक थे। अपने धर्म को टिकाने की चाह उनमें है और निरन्तर बढ़ रही है। कल्याण आश्रम ने उनकी पीठ पर हाथ रखा है, कठिनाइयों से जूझने शक्ति दी है, देर से ही सही पर हम उनके पास पहुँचे हैं। वे अपने धर्म की रक्षा के लिए आज भी तत्पर एवं जागरुक हैं। हमनें अरूणाचल एवं तिब्बत की सीमाओं का सर्वे किया। लगभग हजार किलोमीटर लम्बी सीमा है। 10 टोलियों के माध्यम से हम वहाँ पहुँचे। वहाँ पर सड़कें तथा अन्य सुविधाएं नही थी। हमने वहां के लोगों से उनकी सुविधाओं और असुविधाओं की जानकारी प्राप्त की। उनके हृदय में अपने देश के प्रति किसी प्रकार का आक्रोश नहीं देखा और न ही सरकार के लिए कोई शिकायत का भाव था। इसके पश्चात जनरल जे.जे.सिंह से मिलकर हमने वनवासियों को शिक्षित कर, ट्रेनिंग देकर फौज में भर्ती करने के कार्य को प्राथमिकता दी और सफल हुए। असम राइफल्स में कार्यरत वनवासियों को देखकर मन अति प्रसन्नता से भर जाता है।

वनों द्वारा प्राप्त वस्तुओं की समाज में उपयोगिता अधिक बढ़े इस हेतु हम प्रयत्नशील हैं। हमने इस कार्य के प्रति भी उन्हें जागरूक करके उनके द्वारा बनाये गए सामान को शहरों में भेजने का कार्य किया, जिससे वे आर्थिक रूप से सबल हो रहे हैं। आज भी लगभग 12 करोड़ वनवासियों की आजीविका वनों पर निर्भर है। अंग्रेजों के शासनकाल में वन संरक्षण विभाग (फॉरेस्ट डिपार्टमेंट) ने उन्हें अलग करके वनों पर आश्रित लोगों के लिए एक सीमा रेखा खींच दी थी। वे सरकारी इजाजत के बिना वनों में नहीं जा सकते थे परन्तु अब सरकार ने कुछ बदलाव किए हैं पर अभी और कार्य की आवश्यकता है। कल्याण आश्रम द्वारा उन्हें शिक्षित कर अन्य कार्यों के लिए प्रेरित कर जीविकोपार्जन के साधन सुलभ कराये गए हैं। **नमो इम्पेक्ट चैनल** में इंटरव्यू के

दौरान आपने एक पूर्व घटना का वर्णन किया- बालासाहब देशपांडे जब कल्याण आश्रम के कार्य हेतु 1981 में मेघालय राज्य में गए थे तब खासी जनजाति के 10 लोग मिलने आए थे। उन्हीं के बीच भोजन किया गया। बातों-बातें में उन्हानें पूछा कि यह भोजन किसने बनाया है? तब एक महिला आईं, उसने अपना नाम **माईपासा** बताया। उसने बताया कि मैं 50 किलोमीटर दूर से आपसे मिलने आई हूँ। यहाँ गारो खासी जनजातियों ने ईसाइयों के प्रभाव से धर्मान्तरण कर लिया है पर मैंने नहीं किया। मैं हमेशा सोचती थी कि कोई न कोई हिन्दू प्रचारक जरूर आयेगा, आज आप आए हैं मुझे बहुत आशा है कि हमारी जनजाति की रक्षा करेंगे। उसकी आँखों में विनम्रता के भाव देखकर बालासाहब आत्मविभोर हो गये। हमारी सीमाओं के प्रहरी वनवाासियों को शत्-शत् नमन। शांत, सच्चरित्र, धर्मानुरागी भारत के दर्शन वनवासी क्षेत्र में ही होते हैं। यही हमारा वास्तविक भारत है।

(अ.भा.संगठनमंत्री अतुल जोग के टी.वी. साक्षात्कार पर आधारित)

अमृत वचन

कार्य की अधिकता नहीं, अनियमितता आदमी को मार डालती है।

- महात्मा गांधी

जिस शिक्षा से कर्तव्यनिष्ठा और नैतिकता फलित न हो वह शिक्षा अधूरी है।

- आचार्य महाश्रमण

गुणों से मानव की पहचान होती है, उच्च सिंहासन पर बैठने से नहीं। शिखर पर बैठने से कौवा गरुड़ नहीं हो जाता।

- चाणक्य

शोक संवाद

मांगीलाल जी जैन का दु:खद निधन

वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय सदस्य तथा उत्तर पूर्व भारत के कल्याण आश्रम कार्य से 1978 से ही गहन रूप से जुड़े ध्येयनिष्ठ समर्पित कार्यकर्ता श्री मांगीलाल जी जैन का स्वर्गवास शनिवार 27 जून 2020 हो गया। आपने पूर्वांचल कल्याण आश्रम के कोषाध्यक्ष का दायित्व भी कई वर्षों तक वहन किया। मांगीलाल जी श्री हरि सत्संग समिति एवं वनबंधु परिषद जैसी विभिन्न सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे।

मां भारती के इस सपूत के निधन से हम कल्याण आश्रम परिवार के सभी कार्यकर्ता मर्माहत हैं तथा परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवारजनों को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने शक्ति देवें।

- **श्री ललित चौधरी,** संयोजक-अलीपुर समिति, का असामयिक स्वर्गवास हृदयाघात के कारण गत् 17 मई 2020 को हो गया। आप कल्याण आश्रम कार्य से दो दशक से भी अधिक समय से जुड़े हुए थे। आप अपने पीछे पत्नी, दो पुत्र तथा एक पुत्री छोड़ गए हैं।
- पूर्वांचल कल्याण आश्रम, कोलकाता महानगर के सह-संगठनमंत्री श्री विमल मल्लावत की पूज्य माताश्री **श्रीमती शांतिदेवी मल्लावत** (धर्मपत्नी स्व. भँवरलालजी मल्लावत) का देहावसान 19 जून 2020 को प्रात: काल हो गया। आपका पूरा परिवार राष्ट्रभक्ति के संस्कारों से ओतप्रोत है।
- काकुड़गाछी समिति की अध्यक्षा श्रीमती आशा बठीजा के पति **श्री रमेश जी बठीजा** का वृहस्पतिवार 25 जून 2020 को सुबह गोलोक गमन हो गया।

कल्याण आश्रम परिवार सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति भावपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

बिहार रेजिमेंट के शहीदों की शहादत को नमन

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, अलीपुर महिला समिति

मत भूलो सीमा पर वीरों ने है प्राण गँवाए
कुछ याद उन्हें भी कर लो जो लौटके घर न आए

चीन हमेशा भारत विरोधी षड्यंत्रों में आगे रहता है।

उसकी स्वार्थ से परिपूर्ण नीतियां जग जाहीर है। 15 जून को गलवान घाटी में घटी हमारे वीर जवानों की शौर्यगाथा कौन भूल सकता है? जब-जब बलिदान

का इतिहास लिखा जाएगा 15 जून की बलिदान गाथा स्वर्णाक्षरों में लिखी जाएगी। सुबह होते ही खबर आने लगी कि गलवान घाटी में चीनी सिपाहियों को धूल चटाते हुए मुठभेड़ में हमारे 20 रणबांकुरे शहीद

हो गए और जब खबरे यह बताने लगी कि हमारे सेनानियों पर चीनी सिपाहियों ने धोखे से आक्रमण किया और हमारे जवान आखिरी सांस तक लड़ते रहे लेकिन माता का सिर झुकने नहीं दिया तव हम भारतवासियों की आँखे नम हो गई, कलेजा फट गया लेकिन माथा गर्व से ऊँचा हो गया। हर सांस फिर जवां हो गई जब हमें यह जानकारी मिलने लगी

कि बलिदान की इस आहुति में बंगाल के दो सैनिक भी शहीद हुए हैं। उसमें भी एक वनक्षेत्र से **गणेश हंसदा** हैं। हमारे प्रधानमंत्री का वीडियो संदेश आया जिसमे उन्होंने कहा कि हमारे सैनिकों की शहादत बेकार नहीं जाएगी और हमें फख्र है कि हमारे सैनिक दुश्मन की सेना को मारते हुए शहीद हुए हैं। कल्याण आश्रम परिवार हमारे वीर सैनिकों की शहादत को श्रद्धा पूर्वक नमन करता है।

बोधकथा.....

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

किसी वन में दो संत रहते थे। उनकी अपनी-अपनी कुटिया थी। बड़ा सुन्दर वातावरण था। नदी तट, बहता निर्मल जल, पक्षियों का कलरव कुल मिलाकर दोनों संत बड़े आनन्दपूर्वक अपना पूजा-पाठ और सत्संग करते थे। एक दिन बहुत बड़ा तूफान आया और दोनों की कुटिया लगभग आधी ही बची। बाकी सब नष्ट हो चुकी थी।

अपनी कुटिया की इस दुर्गति को देखकर पहला संत बहुत दु:खी हुआ। भगवान को कोसने लगा। कहने लगा कि हे प्रभु दिन-रात आपका भजन पूजन करते हैं, हर सांस पर आपका नाम जपते रहते हैं। इस निर्जन वन में जो कुछ मिलता उसे ही खाकर जीवन चलाते हैं। फिर भी आपने मेरी कुटिया को नहीं बचाया। सोचा भी नहीं अब मैं क्या करूँगा। यह कहकर निराश और दु:खी अपनी कुटिया के सामने बैठकर भगवान को जी भर कोसता रहा।

वहीं दूसरा संत अपनी कुटिया की स्थिति देखकर भगवान को धन्यवाद कहने लगा। हाथ जोड़कर विनम्रता पूर्वक कहने लगा, कि प्रभु आप जैसा दयालु कौन हो सकता है? इस बड़े तूफान में भी आपने हमारी कुटिया को इतना तो बचा लिया है कि मैं थोड़ा आराम तो कर सकता हूँ। जो बचा हुआ हिस्सा है, वह उसको जोड़कर धीरे-धीरे बना लेगा। कहने लगा प्रभु अपनी दया-दृष्टि बनाए रखना। इस छोटे से प्रसंग से यही सीख मिलती है कि हालात जैसे भी हों, हमारी सोचा सदा सकारात्मक होनी चाहिए। सकारात्मक सोचा के कारण एक संत प्रसन्न है, और नकारात्मक सोच के कारण दूसरा संत दु:खी है। यह प्रसंग आज के कोरोना-काल में भी लागू होता है।

कविता.....

याचना नहीं अब रण होगा

- रामधारी सिंह दिनकर

'भूलोक, अतल पाताल देख,
गत और अनागत काल देख,
यह देख, जगत् का आदि-सृजन,
यह देख, महाभारत का रण;
मृतकों से पटी हुई भू है,
पहचान, कहाँ इसमें तू है

'अम्बर में कुन्तल-जाल देख,
पद के नीचे पाताल देख,
मुट्ठी में तीनों काल देख,
मेरा स्वरूप विकराल देख।
सब जन्म मुझी से पाते हैं,
फिर लौट मुझी में आते हैं।

'जिह्वा से कढ़ती ज्वाल सघन,
साँसों में पाता जन्म पवन,
पड़ जाती मेरी दृष्टि जिधर,
हँसने लगती है सृष्टि उधर।
मैं जभी मूँदता हूँ लोचन,
छा जाता चारों ओर मरण।

'बांधने मुझे तो आया है,
जंजीर बड़ी क्या लाया है?
यदि मुझे बाँधना चाहे मन,
पहले तो बाँध अनन्त गगन।
सूने को साध न सकता है,
वह मुझे बाँध कब सकता है?

'हित-वचन नहीं तूने माना,
मैत्री का मूल्य न पहचाना,
तो ले, मैं भी अब जाता हूँ,
अन्तिम संकल्प सुनाता हूँ।
याचना नहीं अब रण होगा,
जीवन-जय या कि मरण होगा।

(रश्मि रथी से)

कल्याण आश्रम के विविध कार्यक्रम

विपदायें बौनी हुईं, सेवा-भाव विशाल;
कठिन परिश्रम से सदा, सहज लगे हर काम।

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग, 2 तल्ला, कमरा नं. 51
कोलकाता - 700007, दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792